शेख़ फ़रीद - सबद २३

फरीदा जंगल जंगल किआ भवहि वण कंडा मोड़ेहि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा जंगल जंगल किआ भवहि वण कंडा मोड़ेहि ॥
वसी रब हिआलीऐ जंगल किआ ढूढेहि ॥१९॥

सार: जितना अधिक हम बाहरी स्रोतों पर निर्भर होते हैं, उतना ही हम अपने सच्चे स्वरूप से कट जाते हैं। यह दर्शन बाहरी रीति-रिवाजों, कर्मकांडों की आलोचना करता है और आत्ममंथन, जागरूकता और आध्यात्मिक संतुलन को महत्व देता है। यह इस धारणा को चुनौती देता है कि ईश्वर की प्राप्ति केवल शारीरिक कठिन तपस्या या एकांतवास से होती है। जो हम बाहर खोजते हैं वह हमारे भीतर की चेतना में पहले से ही विद्यमान है जिसे हम धारणा को बदलकर पहचान सकते हैं।

फरीदा जंगल जंगल किआ भवहि वण कंडा मोड़ेहि ॥
फ़रीद कहते हैं, काँटेदार पेड़ों के बीच झुककर एक जंगल से दूसरे जंगल में क्यों भटकते हो? यह काल्पनिक चित्र लक्ष्यहीन भटकने, एकांत और शारीरिक कष्ट के माध्यम से सार्वभौमिक शक्ति की खोज को चुनौती देता है।

वसी रब हिआलीऐ जंगल किआ ढूढेहि ॥१९॥
सर्वव्यापी ऊर्जा व्यक्ति की चेतना में निवास करती है फिर उसे जंगल में क्यों खोजें? यह प्रतीक है कि बिना आंतरिक जागरूकता के बाहरी भटकना निरर्थक है। (१९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद आध्यात्मिक साधक को भ्रम से जागरूकता की ओर निर्देशित करते हैं। एक जंगल से दूसरे जंगल भटकने की प्रतीकात्मकता मन के विविध विचारों की यात्रा दर्शाती है और कांटे अहंकार और द्वैत का प्रतीक हैं। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आध्यात्मिक जागृति कोई बाहरी रिवाज या आत्म-त्याग नहीं है। इसके बजाय, यह हमें स्वयं के साथ बैठने, अपने विचारों का सामना

करने और अपने भीतर मौजूद उस सर्वव्यापी जागरूकता को पहचानने के लिए आमंत्रित करता है जो समस्त जीवन में व्याप्त है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com